महमूद गजनवी का आक्रमण

असि० प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी० एम० कॉलेज, रक्सिया, मधुबनी
मो०-8051796740

अनुकूल परिस्थितियों के बीच महमूद गजनवी ने 11 वीं शताब्दी से भारत पर आक्रमण प्रारम्भ किया। सर हेनरी इलियट के अनुसार महमूद ने भारत पर कुल 17 आक्रमण किये। यद्यपि यह ~~सर्वस्वीकृत~~ सर्वस्वीकृत नहीं है। इतिहासकारों की सर्वमान्य मान्यता यह है कि महमूद ने कम से कम 12 आक्रमण भारत पर किये। महमूद के आक्रमण 1000 ई० में आरम्भ हुए और उसने पहले उसने सीमा के कुछ किलों को जीता। उसने दूसरा आक्रमण 1001 ई० में किया। इस बार हिन्दूशाही राजा जयपाल ने पेशावर के निकट उसका मुकाबला किया। युद्ध में महमूद की विजय हुई। महमूद जयपाल की राजधानी वैहन्द के निकट तक गया और व्यापक लूटमार की। जयपाल और उसके सम्बन्धियों को महमूद ने 25 हाथी और 2,50,000 दीनार लेकर मुक्त कर दिया। इस प्रकार बहुत अधिक धन लेकर महमूद भारत से वापस गया। जयपाल ने अपनी निरंतर पराजयों से स्वयं को इतना अधिक अपमानित अनुभव किया कि उसने आत्मदाह कर लिया।

महमूद का एक अन्य महत्वपूर्ण आक्रमण मुल्तान पर हुआ। मुल्तान के शिया सम्प्रदायी करमाथियों के शासक अब्दुल फतह दाऊद से भी महमूद असंतुष्ट था। फलस्वरूप महमूद ने अभियान कर 1006 ई० में मुल्तान को जीत लिया। दाऊद ने महमूद को 20,000 दिरहम प्रति वर्ष देने का वादा किया। अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमा पर तुर्की आक्रमण की सूचना पाकर महमूद, दाऊद को मुल्तान तथा नौशा शाह (यह जयपाल का नाती था जिसने इस्लाम कबूल कर लिया था) को अन्य विजित भारतीय क्षेत्र सौंपकर वापस चला गया। किन्तु महमूद के वापस जाने के पश्चात् दाऊद तथा नौशा शाह दोनों ने विद्रोह कर दिया। 1008 ई० में महमूद पुनः भारत आया और उसने नौशाशाह और दाऊद को कैद करके मुल्तान को अपने राज्य में मिला लिया।

मुल्तान के महमूद के हाथों में चले जाने से हिन्दूशाही शासक आनन्दपाल को अपने राज्य पर दो तरफ से आक्रमण का भय हो गया। उसने एक बड़ी सेना स्कन्ध की, पड़ोसी राज्यों से सहायता ली और पेशावर की ओर बढ़ा। 1006 ई० में वैहन्द के निकट महमूद ने उसका मुकाबला किया और उसे पराजित कर दिया। सिन्धु से

नागरकोट तक के भू-क्षेत्र पर महमूद का अधिकार हो गया। आनन्दपाल के पश्चात् उसके पुत्र त्रिलोचनपाल ने समय समय पर काश्मीर और बुन्देलखंड के शासकों से सहायता प्राप्त करके संघर्ष करता रहा परन्तु निरन्तर असफल ही रहा। उसके पश्चात् उसके पुत्र भीमपाल की स्थिति महमूद से संघर्ष की नहीं रही। 1020ई० में भीमपाल की मृत्यु हो गयी। अन्ततोगत्वा हिन्दूशाही राज्य समाप्त हो गया और सम्पूर्ण पंजाब पर महमूद का अधिकार हो गया। उस समय यही एक ऐसा हिन्दू राज्य था जिसके शासकों ने दूरदर्शिता का परिचय दिया और अपनी तथा भारत की सुरक्षा के लिये आक्रमण-कारी नीति को अपनाया। उसके पतन से हिन्दुओं की विदेशियों के विरुद्ध संयुक्त होकर मुकाबला करने की योजना नष्ट हो गयी, उत्तर-पश्चिम के प्रवेश द्वार पर तुर्कों का अधिकार हो गया और महमूद को भारत में प्रवेश करने तथा अपनी धन-पिपासा को सन्तुष्ट करने का अवसर मिल गया।

आनन्दपाल एवं हिन्दूशाही शासकों की पराजय तथा समाप्ति के पश्चात् महमूद ने 1009ई० में अलवर राज्य स्थित नारायणपुर नामक स्थान को जीता। 1014ई० में उसने थानेश्वर को लूटा। मार्ग में डेरा के शासक राजाराम ने उससे युद्ध किया परन्तु उसकी पराजय हुई। सभी मन्दिरों व मन्दिरों मूर्तियों को तोड़ा तथा नगर को लूटकर महमूद वापस चला गया। 1018ई० में कन्नौज राज्य पर आक्रमण करने के लिये महमूद पुनः भारत वापस लौटा। मथुरा के निकट महावन में यदु-वंश के शासक कुलचन्द्र ने उसका मुकाबला किन्तु पराजित हुआ। मथुरा की रक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था और महमूद ने वहाँ इच्छानुसार लूटमार की। उसी के कथनानुसार मन्दिरों में सोना और चाँदी की हीरे-जवाहरातों से जड़ी हुई छोटी मूर्तियां थी। उनमें से कुछ सोने की मूर्तियाँ पाँच-पाँच हाथ ऊँची थी जिनमें से एक में 50,000 दीनार के मूल्य की लाल मणियाँ जड़ी हुई थी। विभिन्न मूर्तियों के नीचे अतुल धनराशि गड़ी हुई थी जिसे महमूद ने प्राप्त किया। वहाँ से महमूद कन्नौज गया जहाँ गुर्जर-प्रतिहार वंश के अन्तिम शासक राज्यपाल का शासन था। राज्यपाल बिना युद्ध किये भाग गया और कन्नौज को महमूद ने लूट लिया। उसके पश्चात् महमूद ने मन्झावन नामक स्थान पर आक्रमण किया जो ब्राह्मणों के किले के नाम से विख्यात

था। 25 दिन तक महमूद किले को नहीं जीत सका लेकिन उसके पश्चात् बचने का का कोई रास्ता न दिखने की स्थिति में किले की स्त्रियाँ और बच्चे जल मरे और पुरुष युद्ध में मारे गये। उसके बाद असी के शासक चन्द्रपाल और सिरसावा (सहारनपुर के निकट) के शासक चाँदराय ने उसका मुकाबला नहीं किया। मार्ग में अन्य स्थानों पर भी महमूद का कोई मुकाबला नहीं हुआ और विभिन्न स्थानों पर लूटमार करता हुआ महमूद गजनी वापस लौट गया।

महमूद के वापस जाने के पश्चात् बुन्देलखंड के शासक विद्याधर ने कुछ हिन्दू-राजाओं का एक मित्र-संघ बनाया जिसका मुख्य उद्देश्य कन्नौज के शासक राज्यपाल को सजा देना था। राज्यपाल ने मथुरा और वृन्दावन जैसे तीर्थस्थानों को लूटने वाले महमूद से बिना युद्ध किये हुए भागकर एक बड़ा अपराध किया था इन राजाओं ने राजाओं ने राज्यपाल पर आक्रमण करके उसे मार दिया। फलस्वरूप महमूद ने इस घटना की सूचना पाकर विद्याधर को दण्ड देने का फैसला किया और 1019 ई० में वह पुनः भारत आया और बरी की ओर बढ़ा जिसे प्रतिहारों ने कन्नौज की लूट के पश्चात् अपनी राजधानी बना लिया था। राज्यपाल का पुत्र त्रिलोचनपाल वहाँ का शासक था। महमूद ने बरी के किले को ध्वस्त कर दिया। उसके पश्चात् महमूद अपने मुख्य शत्रु विद्याधर को परास्त करने के लिये बुन्देलखण्ड की सीमा पर पहुँचा। 1022 ई० में युद्ध के लिये विद्याधर एक बड़ी सेना लेकर तैयार था। खिचुए युद्ध के पश्चात् विद्याधर अपनी पराजय को देख रात के अंधेरे में चुपके से भाग निकला। विद्याधर का साहस छोड़ देना उसके राज्य के लिये बड़ा विनाशकारी सिद्ध हुआ। महमूद ने उसके सम्पूर्ण राज्य में लूट-मार की और बहुत सी सम्पत्ति लेकर वापस लौट गया। मार्ग में ग्वालियर के राजा कीर्तिराज को सन्धि के लिये बाध्य करता हुआ महमूद कालिंजर के किले के सम्मुख पहुँचा। किले का घेरा बहुत समय तक पड़ा रहा परन्तु उसे जीता न जा सका। विद्याधर ने सन्धि की बातचीत की। जिसे महमूद ने स्वीकार कर लिया। महमूद ने विद्याधर को 15 किले भी इनाम रूप में दिये। उसके पश्चात् महमूद वापस चला।

1025 ई० में महमूद पुनः भारत आया। इसबार उसने एक बड़ी सेना लेकर सोमनाथ पर चढ़ाई की। काठियावाड़ (गुजरात) के समुद्र तट पर बना शिव का यह विशाल सोमनाथ मंदिर उत्तर-भारत में सबसे अधिक प्रतिष्ठित मंदिर था। लाखों व्यक्तियों की प्रतिदिन की भेंट के अतिरिक्त 10,000 गाँवों की आय उसे प्राप्त होती थी। हजारों प्रकार के हीरे-जवाहरात से शिव-लिंग का छत्र बना हुआ था। स्वयं शिव-लिंग बिना किसी सहारे के बीच अधर में लटका हुआ था। सोमनाथ का शिव मंदिर अद्भुत था।

परन्तु उसके पुजारियों का दम्भ आश्चर्यजनक था। उनका कहना था कि महमूद उत्तर भारत के देव मन्दिरों को इस कारण नष्ट कर सका क्योंकि भगवान सोमनाथ उन सभी से असन्तुष्ट थे। पुजारियों ने कहा कि महमूद भगवान सोमनाथ को हानि पहुँचाने की शक्ति नहीं रखता। पुजारियों का यह दम्भ तथा मन्दिर की अतुल सम्पत्ति महमूद के आक्रमण का कारण बनी। मुल्तान के मार्ग से महमूद ने काठियावाड़ में प्रवेश किया। 1025 ई० में काठियावाड़ की राजधानी अन्हिलवाड़ा पहुँच गया। राजा भीमदेव भाग खड़ा हुआ और महमूद ने बिना किसी विरोध के उसकी राजधानी को लूटा। इसके पश्चात् महमूद सोमनाथ मन्दिर पहुँचा। इस समय मन्दिर के द्वार पर हजारों भक्त खड़े थे अचानक युद्ध में लगभग 50,000 हजार से अधिक व्यक्ति मारे गये। महमूद ने मन्दिर को नष्ट कर दिया तथा उसके धन में लगे उस चमचमाते पत्थर को हटा दिया जिसके सहारे शिव-लिंग अधर में लटका हुआ था। पत्थर के हटते ही शिव-लिंग जमीन पर गिर पड़ा। महमूद ने शिवलिंग को तोड़ डाला। इसके पश्चात् मन्दिर से अतुल सम्पत्ति लेकर महमूद सिन्ध के रेगिस्तान से वापस लौटा। इसप्रकार महमूद मुल्तान के रास्ते सुरक्षित खजाने के साथ गजनी पहुँच गया। सोमनाथ मन्दिर के शिवलिंग के टुकड़े को गजनी की जामी मस्जिद की सीढ़ियों में लगा दिया गया।

जिस समय महमूद सोमनाथ को लूटकर वापस जा रहा था रास्ते में सिन्ध के जाटों ने उसे तंग किया। जाटों को दंड देने के लिये 1027 ई० में महमूद अन्तिम बार भारत आया। जाटों को उसने कठोरता से समाप्त किया। उनकी स्त्रियों और बच्चों को दास बना लिया गया। यह महमूद का भारत पर अन्तिम आक्रमण था। महमूद ने विजय के पश्चात् पंजाब, मुल्तान तथा अफगानिस्तान के क्षेत्र में गजनी राज्य को स्थापित किया। 1030 ई० में महमूद की मृत्यु हो गयी।